CBSE Class 09 - Hindi A
Sample Paper 03 (2020-21)

Maximum Marks: 80
Time Allowed: 3 hours

General Instructions:

- इस प्रश्नपत्र में चार खंड हैं।
- सभी खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- यथासंभव प्रत्येक खंड के प्रश्नों के उत्तर क्रम से लिखिए।

खंड - क (अपठित गद्यांश)

1. **निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-**

सुचारित्र्य के दो सशक्त स्तंभ हैं-प्रथम सुसंस्कार और द्वितीय सत्संगति। सुसंस्कार भी पूर्व जीवन की सत्संगति व सत्कर्मों की अर्जित संपत्ति है और सत्संगति वर्तमान जीवन की दुर्लभ विभूति है। जिस प्रकार कुधातु की कठोरता और कालिख पारस के स्पर्श मात्र से कोमलता और कमनीयता में बदल जाती है, ठीक उसी प्रकार कुमार्गी का कालुष्य सत्संगति से स्वर्णिम आभा में परिवर्तित हो जाता है। सत्संगति से विचारों को नई दिशा मिलती है और अच्छे विचार मनुष्य को अच्छे कार्यों में प्रेरित करते हैं। परिणामतः सुचरित्र का निर्माण होता है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने लिखा है-'महाकवि टैगोर के पास बैठने मात्र से ऐसा प्रतीत होता था, मानो भीतर का देवता जाग गया हो। वस्तुतः चरित्र से ही जीवन की सार्थकता है। चरित्रवान व्यक्ति समाज की शोभा है, शक्ति है। सुचारित्र्य से व्यक्ति ही नहीं, समाज भी सुवासित होता है और इस सुवास से राष्ट्र यशस्वी बनता है। विदुर जी की उक्ति अक्षरशः सत्य है कि सुचरित्र के बीज हमें भले ही वंश-परंपरा से प्राप्त हो सकते हैं, पर चरित्र-निर्माण व्यक्ति के अपने बलबूते पर निर्भर है।

आनुवंशिक परंपरा, परिवेश और परिस्थिति उसे केवल प्रेरणा दे सकते हैं, पर उसका अर्जन नहीं कर सकते; वह व्यक्ति को उत्तराधिकार में प्राप्त नहीं होता। व्यक्ति-विशेष के शिथिल-चरित्र होने से पूरे राष्ट्र पर चरित्र-संकट उपस्थित हो जाता है, क्योंकि व्यक्ति पूरे राष्ट्र का एक घटक है। अनेक व्यक्तियों से मिलकर एक परिवार, अनेक परिवारों से एक कुल, अनेक कुलों से एक जाति या समाज और अनेकानेक जातियों और समाज-समुदायों से मिलकर ही एक राष्ट्र बनता है। आज जब लोग सूचित्र-नमाण की बात करते हैं तब वे स्वयं इस राष्ट्र के एक आवक घट्क हैं-इस बात को विस्तक देते हैं।

i. सत्संगति कुमार्गी को कैसे सुधारती है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। **(2)**
ii. चरित्र के बारे में विदुर के क्या विचार हैं? **(2)**
iii. व्यक्ति के चरित्र-निर्माण में किस-किस का योगदान होता है तथा व्यक्ति सुसंस्कृत कैसे बनता है? **(2)**
iv. व्यक्ति-विशेष का चरित्र समूचे राष्ट्र को कैसे प्रभावित करता है? **(2)**
v. सुचारित्र्य के दो सशक्त स्तंभों के नाम बताइए।**(1)**

vi. परिणामतः सुचरित्र का निर्माण होता है। रेखांकित शब्द का विलोम शब्द लिखिए। **(1)**

खंड - ख (व्याकरण)

2. 'प्रत्युपकार' शब्द में से उपसर्ग और मूल शब्द अलग कीजिए।
   a. प्रतु + उपकार
   b. प्रत्यु + उपकार
   c. प्रति + उपकार
   d. प्रत + उपकार
3. 'निजत्व' शब्द में से मूल शब्द और प्रत्यय अलग कीजिए।
   a. निजता + व
   b. निज + तव
   c. निज + त्व
   d. निजत + व
4. 'अन' प्रत्यय लगाकर दो नए शब्द लिखिए।
   a. सामान, सामान्य
   b. गमन, चलन
   c. घराना, रोजाना
   d. सम्मान, चालान
5. 'स' उपसर्ग युक्त शब्द हैं -
   a. सन्मित्र, संहार
   b. सहित, सपरिवार
   c. सञ्चालन, सम्मान
   d. सच्चरित्र, सन्मार्ग
6. 'गगनचुम्बी' शब्द का उचित समास विग्रह और समास का नाम दिए गए विकल्पों में से चुनिए।
   a. गगन को चूमने वाली - समास विग्रह
      कर्मधारय समास - समास का नाम
   b. गगन को चूमने वाली - समास विग्रह
      द्वंद्व समास - समास का नाम
   c. गगन को चूमने वाली - समास विग्रह
      अव्ययीभाव समास - समास का नाम
   d. गगन को चूमने वाली - समास विग्रह
      कर्म तत्पुरुष समास - समास का नाम
7. 'पीताम्बर' शब्द का समास विग्रह कर समास का नाम लिखिए।
   a. पीत अंबर - समास विग्रह

तत्पुरुष समास - समास का नाम

b. पीत (पीला) है अंबर (वस्त्र) जिसका अर्थात श्रीकृष्ण - समास विग्रह
   अव्ययीभाव समास - समास का नाम

c. पीत (पीला) है अंबर (वस्त्र) जिसका अर्थात श्रीकृष्ण - समास विग्रह
   बहुव्रीहि समास - समास का नाम

d. पीत (पीला) है अंबर (वस्त्र) जिसका अर्थात श्रीकृष्ण - समास विग्रह
   कर्मधारय समास - समास का नाम

8. 'अष्टाध्यायी' शब्द के लिए उचित समास विग्रह और समास का नाम दिए गए विकल्पों में से चुनिए।

   a. अष्ट अध्यायों का समूह - समास विग्रह
      द्वंद्व समास - समास का नाम

   b. अष्ट अध्यायों का समूह - समास विग्रह
      कर्मधारय समास - समास का नाम

   c. अष्ट अध्यायों का समूह - समास विग्रह
      अव्ययीभाव समास - समास का नाम

   d. अष्ट अध्यायों का समूह - समास विग्रह
      द्विगु समास - समास का नाम

9. अव्ययीभाव समास में पूर्व पद __________होता है। रिक्त स्थान के लिए उचित विकल्प चुनिए।

   a. अव्यय
   b. सर्वनाम
   c. विशेषण
   d. क्रिया

10. जिन वाक्यों से कार्य के होने में संदेह या सम्भावना का बोध हो, वे कहलाते हैं -

   a. संदेहवाचक वाक्य
   b. सम्भावनावाचक वाक्य
   c. संकेतवाचक वाक्य
   d. सन्देशवाहक वाक्य

11. अर्थ के आधार पर वाक्य-भेद बताएं - क्या तुम्हारी दादी झूठी है ?

   a. प्रश्नवाचक वाक्य
   b. आज्ञावाचक वाक्य
   c. निषेधवाचक वाक्य
   d. विस्मयादिवाचक वाक्य

12. सारा आँगन नृत्य और संगीत से ओतप्रोत है ! -अर्थ के आधार पर वाक्य भेद बताएं ।

   a. प्रश्नवाचक वाक्य

b. विस्मयादिवाचक वाक्य

c. संकेतवाचक वाक्य

d. निषेधवाचक वाक्य

13. इकलौता बेटा था वह ! - अर्थ के आधार पर वाक्य भेद बताएं।

a. विस्मयादिवाचक वाक्य

b. आज्ञावाचक वाक्य

c. संदेहवाचक वाक्य

d. निषेधवाचक वाक्य

14. अर्थालंकार प्रमुख रूप से कितने प्रकार के होते हैं ?

a. तीन

b. चार

c. पांच

d. दो

15. निम्नलिखित पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार बताइए-

'तरनि–तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए।'

a. रूपक

b. श्लेष

c. अनुप्रास

d. यमक

16. जहाँ दो व्यक्तियों या वस्तुओं के गुणों की समानता दिखाने के लिए एक वस्तु का ही रूप दे दिया जाता है उसे कौन-सा अलंकार कहते हैं?

a. उपमा

b. उत्प्रेक्षा

c. रूपक

d. अतिशयोक्ति

17. जब किसी शब्द की आवृत्ति एक से अधिक बार हो, हर बार उस शब्द का अर्थ भिन्न हो। वहाँ कौन-सा अलंकार होता है?

a. यमक

b. उपमा

c. अनुप्रास

d. श्लेष

खंड - ग (पाठ्य पुस्तक)

18. निम्नलिखित गद्यांशों और उनके नीचे दिए गए प्रश्नोत्तरों को ध्यानपूर्वक पढ़िए-

राह में गाय-बैलों का एक रेवड़ हरे-हरे खेत में चरता नज़र आया। सभी जानवर प्रसन्न थे, चिकने, चपल। कोई उछलता था, कोई आनंद से बैठा पागुर करता था। कितना सुखी जीवन था इनका; पर कितने स्वार्थी हैं सब। किसी को चिंता नहीं कि उनके दो भाई बधिक के हाथ पड़े कैसे दुखी हैं।

सहसा दोनों को ऐसा मालूम हुआ कि यह परिचित राह है। हाँ, इसी रास्ते से गया उन्हें ले गया था। वही खेत, वही बाग, वही गाँव मिलने लगे। प्रतिक्षण उनकी चाल तेज़ होने लगी। सारी थकान, सारी दुर्बलता गायब हो गई। आह, यह लो! अपना ही घर आ गया। इसी कुएँ पर हम पुर चलाने आया करते थे, यही कुआँ है।

प्रश्न

i. हीरा-मोती को अपनी स्थिति और में चरते जानवरों की स्थिति में क्या अंतर नज़र आ रहा था?
ii. 'कितने स्वार्थी हैं सब'-ऐसा कौन कह रहा था और क्यों?
iii. मृतप्राय हो चले हीरा-मोती की दुर्बलता किस तरह गायब हो गई?

19. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये:
    a. आशय स्पष्ट कीजिए-कोई अपने जिस्म की हरारत और दिल की धड़कन देकर भी उसे लौटाना चाहे तो वह पक्षी अपने सपनों के गीत दोबारा कैसे गा सकेगा!
    b. लेखक का भिखमंगों जैसा वेश तथा सुमति का साथ उसकी यात्रा में किस तरह सहायक हुआ?
    c. ल्हासा की ओर यात्रा-वृत्तांत के आधार पर बताइए कि उस समय तिब्बती समाज कैसा था?
    d. किस घटना से पता चलता है कि हीरा-मोती के मन में औरत जाति के प्रति सम्मान था?
    e. हरिशंकर परसाई ने प्रेमचंद का जो शब्दचित्र हमारे सामने प्रस्तुत किया है उससे प्रेमचंद के व्यक्तित्व की कौन-कौन सी विशेषताएँ उभरकर आती हैं?

20. **निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-**

मोरपंखा सिर ऊपर राखिहौं, गुंज की माल गरें पहिरौंगी।
ओढ़ि पितंबर लै लकुटी बन गोधन ग्वारिन संग फिरौंगी।।
भावतो वोहि मेरो रसखानि सों तेरे कहे सब स्वाँग करौगी।
या मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी।।

i. उपर्युक्त काव्यांश का भावार्थ लिखें।
ii. उपर्युक्त काव्यांश का शिल्प सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।
iii. 'भवतो वोहि मेरो रसखानि सों' काव्यांश में 'रसखानि' किसे कहा गया है?

21. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये:
    a. हमारे संतों, भक्तों और महापुरुषों ने बार-बार चेताया है कि मनुष्यों में परस्पर किसी भी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं होता, लेकिन आज भी हमारे समाज में भेदभाव दिखाई देता है- आपकी दृष्टि में इस कारण देश और समाज को क्या हानि हो रही है?
    b. कबीर ने ईश्वर-प्राप्ति के लिए किन प्रचलित विश्वासों का खंडन किया है?
    c. कैदी और कोकिला कविता के आधार पर पराधीन भारत की जेलों में दी जाने वाली यंत्रणाओं का वर्णन कीजिए।

d. **काली तू.....ऐ आली!** इन पंक्तियों में **काली** शब्द की आवृत्ति से उत्पन्न चमत्कार का विवेचन कीजिए।

e. रसखान द्वारा रचित सवैयों का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए।

22. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही 3 के उत्तर दीजिये:

a. चंद्रकांत देवताले की कविता **थोड़े से बच्चे और बाकी बच्चे** (लकड़बग्घा हँस रहा है) पढ़िए। उस कविता के भाव तथा प्रस्तुत कविता के भावों में क्या साम्य है?

b. लेखिका की बहनें हीनभावना का शिकार नहीं हो पाई, इसका क्या कारण था? मेरे संग की औरतें पाठ के आधार पर लिखिए।

c. रामस्वरूप अपने घर को किस प्रकार सजा रहे थे और क्यों? रीढ़ की हड्डी पाठ के सन्दर्भ में बताइए।

खंड - घ (लेखन)

23. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर अनुच्छेद लिखिये:

a. **पुस्तकें पढ़ने की आदत** विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर अनुच्छेद लिखिए।
- पढ़ने की घटती प्रवृति
- कारण और हानि
- पढ़ने की आदत से लाभ

b. **प्लास्टिक की दुनिया** विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर अनुच्छेद लिखिए।
- प्लास्टिक का आविष्कार और इसका उपयोग
- प्लास्टिक के गुण एवं दोष
- प्लास्टिक का पर्यावरण पर प्रभाव

c. **गया समय फिर हाथ नहीं आता** विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर अनुच्छेद लिखिए।
- समय ही जीवन है
- समय का सदुपयोग
- समय के दुरुपयोग से हानि

24. आपका छोटा भाई घर से दूर छात्रावास में रहता है। आप विनीत/विनीता की तरफ से पत्र लिखकर प्रातःकाल नियमित रूप से भ्रमण करने, योग एवं प्राणायाम करने के लिए प्रेरणादायी पत्र लिखिए।

OR

आज दूरदर्शन पर कई कार्यक्रम ऐसे हैं जिन्हें परिवार के साथ बैठकर नहीं देखा जा सकता है। दूरदर्शन के महाप्रबंधक को पत्र लिखकर सुंदर और ज्ञानवर्धक कार्यक्रम प्रसारित करने का अनुरोध कीजिए।

25. चंचल और मोनिका सहपाठी हैं। परीक्षा के बाद दोनों के बीच होने वाले संवाद को लिखिए।

OR

लाइब्रेरी की पुस्तकों को लेकर दो अध्यापिकाओं के बीच होने वाले संवाद को लिखिए।

26. **जब मैंने अन्तरिक्ष में कदम रखा** विषय पर लगभग 100-120 शब्दों में एक लघुकथा लिखिए।

OR

वृक्ष की व्यथा विषय पर लगभग 100-120 शब्दों में एक लघुकथा लिखिए।

CBSE Class 09 - Hindi A
Sample Paper 03 (2020-21)

Solution

खंड - क (अपठित गद्यांश)

1. i. सत्संगति से विचारों को नई दिशा मिलती है और अच्छे विचार मनुष्य को अच्छे कार्यों में प्रेरित करते हैं। इससे कुमार्गी व्यक्ति उसी तरह सुधर जाता है, जैसे पारस के संपर्क में आने से लोहा सोना बन जाता है।
   ii. चरित्र के बारे में विदुर का विचार है कि अच्छे चरित्र के बीज वंश-परंपरा से मिल जाते हैं, परंतु चरित्र-निर्माण व्यक्ति को स्वयं करना पड़ता है। सुचरित्र कभी उत्तराधिकार में नहीं मिलता।
   iii. व्यक्ति के चरित्र के निर्माण में सुसंस्कार, सत्संगति, परिवार, कुल, जाति, समाज आदि का योगदान होता है। व्यक्ति में अच्छे संस्कारों व सत्संगति से अच्छे गुणों का विकास होता है। इस कारण व्यक्ति सुसंस्कृत बनता है।
   iv. यदि व्यक्ति-विशेष का चरित्र कमजोर हो, तो पूरे राष्ट्र के चरित्र पर संकट उपस्थित हो जाता है, क्योंकि व्यक्ति पूरे राष्ट्र का एक आचरक घटक होता है।
   v. सुसंस्कार और सत्संगति
   vi. निर्माण - विध्वंस।

खंड - ख (व्याकरण)

2. (c) प्रति + उपकार

   Explanation: 'प्रत्युपकार' में प्रति उपसर्ग और उपकार मूल शब्द है।
3. (c) निज + त्व

   Explanation: 'निजत्व' शब्द में 'निज' मूल शब्द है और 'त्व' प्रत्यय है।
4. (b) गमन, चलन

   Explanation: 'गमन' और 'चलन' में क्रमशः 'गम' और 'चल' मूल शब्द हैं और 'अन' प्रत्यय है।
5. (b) सहित, सपरिवार

   Explanation: 'सहित' और 'सपरिवार' में 'स' उपसर्ग हैं और मूल शब्द क्रमशः 'हित' और 'परिवार' हैं ।
6. (d) गगन को चूमने वाली - समास विग्रह

   कर्म तत्पुरुष समास - समास का नाम

   Explanation: 'को' कारक चिह्न के कारण कर्म तत्पुरुष समास है।
7. (c) पीत (पीला) है अंबर (वस्त्र) जिसका अर्थात श्रीकृष्ण - समास विग्रह

   बहुव्रीहि समास - समास का नाम

   Explanation: समास विग्रह का अन्य अर्थ निकलने के कारण यहाँ बहुव्रीहि समास है।
8. (d) अष्ट अध्यायों का समूह - समास विग्रह

   द्विगु समास - समास का नाम

Explanation: 'अष्टाध्यायी' का पूर्वपद (अष्ट) संख्यावाची विशेषण होने के कारण यहाँ द्विगु समास है।

9. (a) अव्यय

   Explanation: अव्ययीभाव समास का पूर्व पद अव्यय होता है और उससे बनने वाला नवीन पद भी अव्यय ही होता है।

10. (a) संदेहवाचक वाक्य

    Explanation: संदेह व संभावना को संदेहवाचक वाक्यों द्वारा व्यक्त किया जाता है।

11. (a) प्रश्नवाचक वाक्य

    Explanation: प्रश्न पूछा जाने के कारण प्रश्नवाचक वाक्य है।

12. (b) विस्मयादिवाचक वाक्य

    Explanation: प्रस्तुत वाक्य में विस्मय का भाव है ।

13. (a) विस्मयादिवाचक वाक्य

    Explanation: आश्चर्य, हर्ष, शोक आदि भाव विस्मयादिवाचक वाक्य द्वारा व्यक्त होते हैं।

14. (c) पांच

    Explanation: पांच I उपमा, रूपक, अतिशयोक्ति, उत्प्रेक्षा और मानवीकरण अलंकार।

15. (c) अनुप्रास

    Explanation: अनुप्रास I स्पष्टीकरण - उपर्युक्त पंक्ति में 'त'वर्ण की आवृत्ति बार-बार हुई है,अत: यहाँ 'अनुप्रास' अलंकार है।

16. (c) रूपक

    Explanation: रूपक, जैसे-पायो जी मैंने राम-रतन धन पायो।

17. (a) यमक

    Explanation: यमक। जैसे - काली घटा का घमंड घटा। (घटा- बादलों की घटा, कम हुआ) 'घटा' शब्द की आवृत्ति एक से अधिक बार हुई है।

खंड - ग (पाठ्य पुस्तक)

18. i. हीरा-मोती को नीलाम कर बधिक के हाथों बेचा जा चुका था। भूख-प्यास से बेहाल होकर थकान और कमज़ोरी का शिकार हो रहे दोनों बैलों की चाल धीमी होते ही बधिक उन्हें मारता-पीटता था। इसके विपरीत अन्य जानवर हरे-हरे खेतों में चरते प्रसन्न नज़र आ रहे थे। वे उछल-कूद रहे थे। उसमें से कुछ आनंदपूर्वक बैठकर पागुर कर रहे थे। उनका जीवन सुखी था, जबकि हीरा-मोती का जीवन बधिक के हाथों में पड़कर अंत की ओर उन्मुख था।

    ii. 'कितने स्वार्थी हैं सब'-ऐसा हीरा-मोती कह रहे थे क्योंकि बधिक के हाथों पड़कर वे दोनों मौत से भयभीत थे। उन्हें अन्य पशुओं से सहायता पाने की अपेक्षा थी , पर अन्य पशु उनकी ओर ध्यान दिए बिना अपनी मस्ती में खोए थे इसलिए उन्होंने ऐसा कहा।

    iii. मृतप्राय हो चले हीरा-मोती की दुर्बलता और थकान अपने परिचित रास्ते को देखकर गायब हो गई थी। गया भी उन्हें इसी रास्ते से ले गया था। खेत, बाग, गाँव सब उन्हें जाने पहचाने से लगे। अपनी भूमि की पहचान होते ही उनके अंदर शक्ति और ऊर्जा का संचार होने लगा । अपना खेत, कुआँ, पुर चलाने की जगह आदि देखते ही उनके क़दमों में नई जान आ गई और वे उत्साह से भर गए।

19. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये:

a. सालिम अली अनूठे पक्षी प्रेमी थे। लेखक ने उनकी तुलना एक ऐसे पक्षी से की है जिसने अपने जीवन की लम्बी यात्रा को समाप्त कर दिया है और स्वयं मौत की गोद में सो गया है | इस पक्षी (सालिम) की नींद इतनी गहरी है कि दूसरों के शरीर की गर्मी और दिल की धड़कन देकर भी उसे जीवित नहीं किया जा सकता है। उनका पक्षी प्रेम का सपना मौलिक नहीं था वह तो उनका वह सपना था जिसे पूरा करने के लिए उन्होंने जीवन भर प्रयास किया । इस पक्षी को किसी की धड़कनों से जिंदा नहीं किया जा सकता | अर्थात् उनके सामने कोई अन्य पक्षी प्रेमी इस तरह नहीं उत्पन्न किया जा सकता है।

b. लेखक भिखमंगों के वेश में यात्रा कर रहा था। ऐसे में उसके पास धन होने की कल्पना कोई नहीं कर सकता था। इस स्थिति में वह दया का पात्र दिखता था। लेखक जहाँ कहीं भी संदिग्ध व्यक्ति को देखता वह टोपी उतार कर और अपनी जीभ निकालकर "कुची-कुची" (दया-दया) एक पैसा कहकर भीख माँगने लग जाता। इससे डाकू या संदिग्ध व्यक्ति उसे भिखमंगा समझकर आगे बढ़ जाते और लेखक अपनी यात्रा पर साथियों के साथ आगे बढ़ जाता। इस कारण उसे अपनी जान बचाने की परवाह नहीं थी। इसके अलावा सुमति के साथ होने से उसे कहीं भी किसी तरह की परेशानी नहीं हुई। रुकने के लिए उसे अच्छे से अच्छा स्थान मिला। उसे प्रत्येक स्थान पर वैसा ही मान-सम्मान मिलता जैसा सुमति को मिलता। उसकी आवभगत में कोई कमी नहीं हुई।

c. प्रस्तुत यात्रा-वृत्तांत के आधार पर उस समय के तिब्बती समाज के बारे में पता चलता है कि उस समय वहाँ समाज में बहुत खुलापन था | वहाँ जाति-पाँति, छुआछूत, ऊँच-नीच जैसा कोई भेदभाव नहीं था | महिलाएँ पर्दा नहीं करती थीं। वे अपरिचितों को भी चाय बनाकर दे दिया करती थीं। बौद्ध भिक्षुओं को घर के अन्दर तक आने की अनुमति थी | केवल बहुत निम्न श्रेणी के लोगों को चोरी के भय से घर के अन्दर नहीं आने दिया जाता था | समाज में मदिरा-पान (छङ्) का रिवाज था। शाम को लोग छङ् पीकर होशोहवास खो देते थे | बिना जान-पहचान के लोग रात बिताने के लिए आश्रय नहीं देते थे। लोग धार्मिक प्रवृत्ति के तथा अंधविश्वासी थे जो गंडे के नाम पर साधारण कपड़ों के टुकड़ों पर भी विश्वास कर लेते थे।

d. गया के घर में हीरा-मोती से दिनभर काम करवाया जाता और रात में उन्हें खाने के लिए केवल सूखा भूसा दिया जाता था | गया अपने बैलों को खली, चोकर और भूसा सब देता था | ऐसी स्थिति में दोनों के मन में गया के प्रति विद्रोह भर गया था। मोती घर के एकाध सदस्य को अपनी सींग से मार कर फेंक देना चाहता था पर हीरा ने उसे ऐसा करने से मना कर दिया | जब उसने लड़की की सौतेली माँ को सींग से मारने की बात कही तो हीरा ने उससे कहा कि औरत जाति पर सींग चलाना मना है। इससे पता चलता है कि उनके मन में नारी जाति के प्रति सम्मान था।

e. लेखक द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रेमचंद के शब्द चित्र से उनके व्यक्तित्व की निम्नलिखित विशेषताएँ सामने आती हैं-

   i. **सादा जीवन उच्च विचार -** प्रेमचंद आडंबर और बाहरी दिखावे से दूर रहते थे। वे गाँधी जी की तरह सादा जीवन जीने में विश्वास रखते थे । उनके विचार बहुत ही उच्च थे। उन्होंने सामाजिक बुराइयों से कभी समझौता नहीं किया बल्कि उन्हें दूर करने का प्रयास किया।

   ii. **स्वाभिमानी-** प्रेमचंद स्वाभिमानी थे। उन्होंने कभी किसी के आगे दया के लिए हाथ नहीं फैलाया।

   iii. **सामाजिक कुरीतियों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने वाले-** प्रेमचंद ने समाज में व्याप्त कुरीतियों के प्रति लोगों को सावधान किया। वे एक ऐसा स्वस्थ समाज चाहते थे जहाँ कोई भी बुराई न हो।

   iv. **अपने जीवन से संतुष्ट-** प्रेमचंद का जीवन सदा ही अभावों में बीता। उन्होंने अपनी स्थिति दूसरों से छिपाए रखी। वे

जैसे भी थे उसी में खुश रहने वाले थे।

v. **संघर्षशील-** वे रास्ते में आने वाली मुसीबतों से बचकर नहीं निकलते थे बल्कि वे उनका सामना करते थे और उस पर विजय पाकर आगे बढ़ते थे।

20. i. उपर्युक्त काव्यांश में कृष्ण के सौन्दर्य पर मुग्ध गोपियों की उस मनोदशा का वर्णन है जिसमें वह कृष्ण के समान ही रूप धारण करना चाहती है | इसमें एक गोपी दूसरी से कहती है कि हे सखी! मैं कृष्ण के समान ही अपने सर पर मोर के पंखों का मुकुट तथा गले में गुंज की माला पहनूँगी। मैं पीले वस्त्र धारण करूँगी तथा उन्हीं की तरह गोधन गाते हुए गायों के पीछे लाठी लेकर वन-वन घूमूँगी। मेरे कृष्ण को जो भी अच्छा लगता है मैं वो सब कुछ करने को तैयार हूँ। पर हे सखी! कृष्ण की उस मुरली को मैं कभी अपने होठों पर नहीं रखूँगी क्योंकि उसी मुरली ने श्रीकृष्ण को हमसे दूर किया है।

ii. उपर्युक्त काव्यांश का शिल्प सौन्दर्य निम्नलिखित है-

- श्रीकृष्ण के रूप सौन्दर्य का वर्णन है।
- इसमें कवि ने श्रीकृष्ण के सौंदर्य से मोहित गोपियों की उस मुग्धता का चित्रण किया है जिसमें वे स्वयं कृष्ण का रूप धारण कर उनके समान ही बनना चाहती है।
- काव्यांश में ब्रजभाषा का प्रयोग है
- काव्य की भाषा में लयात्मकता तथा संगीतात्मकता है।
- काव्यांश सवैया छंद में रचित है |
- इस काव्यांश में अनुप्रास अलंकार की अनुपम छटा दर्शनीय है।
- अंतिम पंक्ति में यमक अलंकार है |

1. 'भावतो वोहि मेरो रसखानि सों' में रसखानि श्रीकृष्ण को कहा गया है ।

21. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये:

a. हमारे संतों, भक्तों और महापुरुषों ने बार-बार चेताया है कि मनुष्यों में परस्पर किसी भी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं होता, लेकिन आज भी हमारे समाज में भेदभाव दिखाई देता है-समाज में भेदभाव के कारण देश और समाज को बहुत हानि हो रही है। उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं-

i. समाज में जाति और धर्म के नाम पर बँटवारा होने से एक वर्ग से दूसरे वर्ग के बीच मतभेद पैदा हो गए हैं |

ii. इस कारण समाज में उच्च-वर्ग, निम्न-वर्ग को हीन दृष्टि से देखता है।

iii. त्योहारों के अवसर पर अनायास झगड़े होते रहते हैं।

iv. आपसी भेदभाव के कारण एक वर्ग और दूसरे वर्ग में संदेह और अविश्वास बढ़ता जा रहा है |

v. हमारी सहिष्णुता समाप्त होती जा रही है।

vi. आक्रोश बढ़ता जा रहा है जिसका परिणाम उग्रवाद, अलगाववाद के रूप में हमारे सामने आ रहा है।

b. कबीर ने ईश्वर की प्राप्ति के लिए निम्नलिखित प्रचलित विश्वासों का खंडन किया है-

i. मनुष्य मंदिर, मस्जिद में जाकर ईश्वर को प्राप्त करना चाहता है किंतु इससे ईश्वर की प्राप्ति नहीं होती।

ii. ईश्वर को पाने के लिए वह विभिन्न धार्मिक स्थानों की यात्रा करता है, पर ऐसा करने पर भी ईश्वर नहीं मिलते |

iii. वह योग, वैराग्य के माध्यम से ईश्वर पाना चाहता है, पर यह व्यर्थ है।

iv. ईश्वर प्राप्ति के लिए वह आडंबरपूर्ण भक्ति करता है, परंतु इससे ईश्वर की प्राप्ति नहीं होती है।

c. **कविता के आधार पर पराधीन भारत की जेलों में कैदियों को दी जाने वाली यातनाएँ निम्नलिखित हैं--**
   i. कैदियों को बेड़ियों तथा हथकड़ियों में बाँधकर छोटी-छोटी कोठरियों में चोरों, लुटेरों और डाकुओं के साथ रखा जाता था।
   ii. वहाँ कैदियों से पशुओं के समान काम लिया जाता था।
   iii. उन्हें भीषण यंत्रणा दी जाती थी। उनकी साँसों पर अंग्रेज़ सरकार का पहरा रहता था |
   iv. उन्हें खाने को बहुत कम दिया जाता था |
   v. बात-बात में उन्हें गालियाँ दी जाती थीं।
   vi. उनका रोना भी गुनाह माना जाता था |

d. 'काली' शब्द की बार-बार आवृत्ति के माध्यम से निम्नलिखित चमत्कार उत्पन्न हो रहे हैं -
   i. अंग्रेज़ सरकार के शासन की भयावहता का साकार चित्रण हुआ है।
   ii. इससे अंग्रेज़ सरकार के कुकृत्यों की कालिमा के चारों ओर फैले होने का पता चलता है |
   iii. इससे समाज में व्याप्त निराशापूर्ण वातावरण का ज्ञान हो रहा है |

e. रसखान मुसलमान होकर भी श्रीकृष्ण के परम भक्त थे। वे हर समय श्रीकृष्ण या इनसे जुड़ी वस्तुओं के आसपास रहना चाहते थे। वे श्रीकृष्ण के अलावा अन्य किसी की भक्ति नहीं करते थे। वे प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि यदि अगले जन्म में मुझे मनुष्य का जन्म मिले तो ब्रज गाँव में ग्वाल-बालों के बीच ही रहने का सुख मिले।

22. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही 3 के उत्तर दीजिये:

a. विद्यार्थीकविता को पढ़कर भावों की साम्यता का पता स्वयं करें।

b. लेखिका और उसकी बहनें हीनभावना का शिकार इसलिए नहीं हो पाई क्योंकि लेखिका का जन्म उसकी परदादी द्वारा माँगी गई मन्नत (दुआ) के फलस्वरूप हुआ था। उसका भरपूर आदर-सत्कार हुआ। लेखिका की नानी देशभक्त तथा स्वाभिमानी महिला थीं। उनके मन में आजादी के प्रति गहरा लगाव था। इसी कारण लेखिका की माँ की शादी होनहार स्वतंत्रता सेनानी से हो सकी।

   इससे आजादीप्रियता का यह गुण उन्हें विरासत में मिल गया। इसके अलावा लेखिका तथा उसकी बहनों को सशक्त पारिवारिक संस्कार मिले, जिससे उन्हें हीनभावना छू भी न सका।

c. रामस्वरूप अपने घर को तरह-तरह से सजाने में लगे थे। वे तख्त पर दरी बिछाकर चादर बिछवाते थे। कमरे में रखे गुलदस्ते साफ करते हैं। तख्त पर कुछ वाद्य-यंत्र रखवाते थे। कुर्सियों की धूल साफ कराते हैं तथा मेजपोश भी ठीक कराते थे। वे कमरे को साफ-सुथरा इसलिए बनाना चाहते थे क्योंकि उनकी शादी योग्य बेटी उमा को देखने के लिए लड़के वाले, आने वाले थे।

खंड - घ (लेखन)

23. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर अनुच्छेद लिखिये:

a. **पुस्तकें पढ़ने की आदत**

पुस्तकें हमारे जीवन का एक महत्त्वपूर्ण अंश है। पुस्तकों के अध्ययन से हम भिन्न-भिन्न प्रकार के ज्ञान अर्जित करने में सक्षम होते हैं। पुस्तकें विद्यालयी विद्यार्थियों से लेकर बुजुर्गों तक सभी के लिए एक उपयोगी साधन है। विद्यार्थियों का

ज्ञानार्जन पुस्तकों द्वारा संभव होता है, वहीं बुजुर्गों के लिए समय व्यतीत एवं मनोरंजन के साधन रूप में पुस्तकें कार्य करती हैं। वर्तमान दौर में तकनीकों का प्रसार इस हद तक हो चुका है कि आज पुस्तकों का स्थान मोबाइल फोन, लैपटॉप, आईपैड, टैबलेट आदि ने ले लिया है। इनका आकर्षण इतना अधिक हो गया है कि लोगों ने पुस्तकों को पढ़ना बहुत कम कर दिया है। आज पुस्तकें न पढ़ने का कारण विविध प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरण हैं। इन उपकरणों के कारण लोग भले ही कुछ ज्ञान अर्जित कर लेते हैं, परंतु समय का जो दुरुपयोग आज का युवा वर्ग कर रहा है उसको भर पाना असंभव प्रतीत होने लगा है। पुस्तक पढ़ने की आदत से हम नित दिन अध्ययनशील रहते हैं। इससे पढ़ने में नियमितता बनी रहती है तथा हम मानसिक रूप से भी स्वस्थ बने रहते हैं। अतः हमें सदैव पुस्तक पढ़ने की आदत बनानी चाहिए।

b. **प्लास्टिक की दुनिया**

प्लास्टिक का आविष्कार ड्यू बोयस एवं जॉन द्वारा किया गया था। प्लास्टिक का उपयोग मशीन के कल-पुर्जों, पानी की टंकियों, दरवाज़ों, खिड़कियों, चप्पल-जूतों, रेडियो, टेलीविज़न, वाहनों के हिस्सों, आदि में किया जाता है, क्योंकि प्लास्टिक से बनी वस्तुएँ आसानी से खराब नहीं होतीं। यदि किसी कारण ये टूट-फूट जाएँ, तो इन्हें फिर से बनाकर पुनः उपयोग में लाया जा सकता है।

इनमें मनचाहा रंग मिलाकर इन्हें अधिक आकर्षक भी बनाया जा सकता है। यही कारण है कि प्लास्टिक से बने आकर्षक रंग-बिरंगे फूल असली फूलों से अधिक लोकप्रिय हो रहे हैं। आज लोगों को बाज़ार से सामान प्लास्टिक के बने आकर्षक थैलों में पैक करके मिलता है।

इसके अनेक उपयोग के बावजूद प्लास्टिक से बनी वस्तुओं से पर्यावरण बुरी तरह दुष्प्रभावित हो रहा है। प्लास्टिक कभी न गलने-सड़ने वाला पदार्थ है, जिसके कारण भूमि, जल, पर्यावरण आदि अत्यधिक प्रदूषित होते जा रहे हैं। अतः हमें प्लास्टिक का कम से कम उपयोग करना चाहिए, ताकि पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाया जा सके।

c. महापुरुषों ने कहा है, "समय बहुत मूल्यवान है। एक बार निकल जाने पर यह कभी वापस नहीं आता।" वास्तव में, समय ही जीवन है। इसकी गति को रोकना असंभव है। संसार में अनेक उदाहरण हैं, जो समय की महत्ता को प्रमाणित करते हैं। जिसने समय के मूल्य को नहीं पहचाना, वह हमेशा पछताया है। इसके महत्त्व को पहचानकर इसका सदुपयोग करने वाले व्यक्तियों ने अपने जीवन में लगातार सफलता प्राप्त की। जो व्यक्ति समय मिलने पर भी अपने जीवन में कुछ नहीं कर पाते, वे जीवन में असफल रहते हैं।

जो विद्यार्थी पूरे वर्ष पढ़ाई नहीं करते, वे फेल होने पर पछताते हैं। तब यह उक्ति कि 'अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत' चरितार्थ होती है। विद्यार्थी को समय का मूल्य पहचानते हुए हर पल का सदुपयोग करना चाहिए, क्योंकि जो समय को नष्ट करता है, एक दिन समय उसे नष्ट कर देता है। महान् पुरुषों ने समय का सदुपयोग किया और अपने जीवन में सफल हुए। स्वामी दयानंद, महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, मदर टेरेसा आदि इसके ज्वलंत प्रमाण हैं। अतः हमें समय की महत्ता को समझते हुए इसका सदुपयोग करना चाहिए।

24. परीक्षा भवन,
नई दिल्ली।
02 मार्च, 2019
प्रिय अनुज राहुल,

तुम्हारे कक्षाध्यापक के पत्र से पता चला कि तुम्हारी पढ़ाई तो अच्छी चल रही है, पर तुम्हारा स्वास्थ्य गिरता जा रहा है। तुमने पिछले पत्र में कुछ अस्वस्थ होने की बात लिखी भी थी। तुम्हारे स्वास्थ्य का गिरना वास्तव में चिंता का कारण है। राहुल, तुम जानते हो कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है। अपने शरीर को स्वस्थ एवं निरोग बनाए रखने के लिए स्वास्थ्य संबंधी कुछ आदतों एवं नियमों पर ध्यान देना होगा। इसके लिए सर्वप्रथम तुम्हें प्रातःकाल में बिस्तर त्यागकर पार्क या पास के किसी बाग-बगीचे में भ्रमण करना चाहिए। प्रातःकाल की स्वच्छ हवा आलस्य को हर कर शरीर में ऊर्जा भर देती है। इससे मन प्रसन्न होता है जिससे पूरे दिन मनोयोग से हम अपना काम कर पाते हैं। इसके अलावा तुम्हें प्रतिदिन योग एवं प्राणायाम भी करना चाहिए। प्राणायाम के माध्यम से फेफड़ों में गई शुद्ध वायु अनेक बीमारियों से छुटकारा दिलाती है।
आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि तुम उपर्युक्त बातों को अवश्य अपनाओगे तथा पत्र द्वारा सूचित करोगे।
तुम्हारी बड़ी बहन,
विनीता

OR

बी-76,
कैलाशपुरी, दिल्ली।
27 फरवरी, 2019
महाप्रबंधक महोदय,
(प्रचार एवं प्रसार)
दूरदर्शन केंद्र, नई दिल्ली।
विषय- सुंदर और ज्ञानवर्धक कार्यक्रम प्रसारित करने के विषय में
मान्यवर,
मैं आपका ध्यान आजकल दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले दैनिक कार्यक्रम की ओर आकर्षित कराना चाहता हूँ। श्रीमान जी दूरदर्शन पर प्रस्तुत कुछ कार्यक्रम ऐसे हैं जिनमें शैक्षिक, गुणवत्ता, नैतिकता, सामाजिकता का नाम तक नहीं है। इसके अलावा इन कार्यक्रमों की तकनीकी गुणवत्ता भी अत्यंत घटिया है। इनकी भाषा तो फूहड़पन की हद पार कर जाती है। अनेक धारावाहिकों में हिंसा और बलात्कार के दृश्यों की भरमार रहती है। इन धारावाहिकों में अंतरंग दृश्यों को फूहड़ता के साथ दिखाया जाता है कि घर-परिवार के सदस्यों के साथ बैठकर देखना मुश्किल हो जाता है। इनका सर्वाधिक दुष्प्रभाव युवाओं और छात्रों पर पड़ता है, जिनका कोमल मस्तिष्क इन बुराइयों को आसानी से अपना लेता है। इन युवाओं से सभ्य नागरिक बनने की आशा कैसे की जाए। अतः आपसे प्रार्थना है कि स्वस्थ समाज की रचना के लिए स्वस्थ मानवीय गुणों को विकसित करने वाले तथा ज्ञानवर्धक कार्यक्रमों का प्रसारण करें जिससे भारतीय संस्कृति की महत्ता बनी रहे।
सधन्यवाद।
भवदीय,
मोहित शर्मा

25. **चंचल** - अरे मोनिका ! कहाँ जा रही हो? बड़ी जल्दी में हो। कैसी हो?
मोनिका - मैं ठीक हूँ, माँ ने दूध मंगाया था, वही लेने जा रही हूँ। तुम बताओ, कैसी हो ?

चंचल- मैं भी बिलकुल ठीक हूँ। तुम्हारी परीक्षा कैसी हुई ?

मोनिका - यह तो रिजल्ट ही बताएगा।

चंचल - मैं तुमसे रिजल्ट नहीं, मैं तो पूछ रही हूँ, कैसे हुए पेपर?

मोनिका - अंग्रेजी तो अच्छा हुआ पर गणित का एक प्रश्न छूट गया। तुम्हारे कैसे हुए?

चंचल - मेरे पेपर अच्छे हुए हैं। अंग्रेजी और गणित में तो मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ। परंतु इसके रिजल्ट का मुझे भरोसा नहीं रहता।

OR

प्रियंका - अरे चंचल! तुम, क्या बात है आज बहुत दिनों बाद लाइब्रेरी में आना हुआ।

चंचल - क्या करूँ। प्रथम इकाई परीक्षा प्रश्न पत्र बनाने में इतनी व्यस्त थी कि यहाँ आने का समय ही नहीं मिला।

प्रियंका - तुम्हारे पास हिंदी की कक्षा नौवीं व दसवीं की दो किताबें थीं। यदि तुम्हारा काम हो गया हो तो उन्हें वापिस कर देना।

चंचल - हाँ, मैंने नौवीं की पुस्तकें में से जो नोट करना था सो कर लिया, बस एक-दो दिन में लौटा दूँगी।

प्रियंका - अच्छा ठीक है। पर कोशिश करना, थोड़ा जल्दी लौटा देना।

चंचल - नौवीं वाली पुस्तक तो मैं सोमवार तक ही दे पाऊँगी।

प्रियंका - चंचल! ठीक है, अच्छा, लाइब्रेरी में हिंदी व्याकरण की नई पुस्तकें आई हैं। जब भी तुम्हारे पास समय हो तो देख लेना। पुस्तकें अच्छी हैं और उनमें बड़ी ही सरलता से सब कुछ समझाया गया है।

चंचल - प्रियंका, बहुत अच्छा किया, मुझे व्याकरण की एक किताब चाहिए थी। क्या मैं यह वाली किताब दो-तीन दिन के लिए ले जा सकती हूँ।

प्रियंका - मैं पहले इन पुस्तकों की जानकारी रजिस्टर में दर्ज कर लूँ फिर तुम ले लेना।

चंचल - ठीक है! मेरा सातवाँ कालांश किसी भी कक्षा में नहीं है। क्या उस समय तुम इस पुस्तक को मुझे दे दोगी ?

प्रियंका - हाँ, तुम उस समय आकर वह किताब ले जाना।

चंचल- ठीक है, अभी चलती हूँ , मुझे कक्षा दस में जाना है। मैं सातवें कालांश में आकर तुमसे मिलती हूँ।

प्रियंका- ठीक है, तब तक मैं तुम्हारी पुस्तक को रजिस्टर में दर्ज करती हूँ।

26. **जब मैंने अन्तरिक्ष में कदम रखा**

बहुत मन करता था कि मैं भी कभी अन्तरिक्ष में जाऊं। जल्दी ही मौका भी मिल गया। अपने चाचाजी के साथ अन्तरिक्ष यान में बैठकर पहुँच गया अन्तरिक्ष। वहाँ से देखने पर सभी ग्रह गेंद की भांति लग रहे थे। मैं यान से उतरा और सभी ग्रहों को छू-छू कर देखने लगा। मंगल तो किसी तारे के समान चमक रहा था। चाँद पर बहुत गड्ढ़े थे। सूरज बहुत गर्म था। मैं उसे छू भी नहीं पाया। पृथ्वी किसी शांत मुनि की भांति लग रही थी। जैसे ही मैंने उसे छूने के लिए हाथ बढ़ाया, मुझे किसी ने धक्का दिया। आँख खुली तो देखा कि मैं अपने पलंग से नीचे गिरा पड़ा हूँ।

OR

वृक्ष की व्यथा

मैं एक वृक्ष हूँ और आज मैं आपको अपनी लघुकथा सुना रहा हूँ। सबसे पहले मैं एक बीज के रूप में जमीन के अंदर बो दिया जाता हूँ। फिर मिट्टी, पानी और हवा की मदद से मुझमें ज़मीन के अंदर जड़ें, ज़मीन के बाहर कोंपलें फूटती, फिर डालियाँ निकलती हैं और फिर कुछ वर्षों में मैं एक विशाल वृक्ष बन जाता हूँ, लेकिन मेरी असली कहानी यहीं से शुरू होती है।
बड़े होने के बाद मुझमें फल आने लगते हैं और लोग मेरे फलों का आनन्द लेते है और कुछ लोग उनसे अपनी कमाई भी कर लेते हैं। मैं सभी को फल के अलावा शुद्ध हवा और गर्मी से बचने के लिए छाँव भी देता हूँ और फिर जब मैं बूढ़ा हो जाता हूँ, तो मुझे काटकर उसी घर के चूल्हे में जला दिया जाता है, जिसकी सेवा में मैंने अपना पूरा जीवन लगा दिया।